'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
UGC Approved Journal
Multidisciplinary Issue
Vol. – V, Issue-I(A)
ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

'ऊँची उड़ान' नाटक के चरित्र संयोजन में सांस्कृतिक मूल्य-बोध

डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे
सहयोगी प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
महात्मा फुले महाविद्यालय,
पिंपरी,पुणे(महाराष्ट्र, भारत)

सार-संक्षेप (Abstract):

नाटक सामूहिक कला है ।नाटक में सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण सन्निहित है ।संस्कृति मानव जीवन का अविभाज्य अंग है ।जीवनमूल्य मनुष्य के सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करते हैं ।नाटक के चरित्र संयोजन में सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का विशेष महत्त्व है ।डॉ.कुसुम लुनिया लिखित 'ऊँची उड़ान'नाटक के नारी चरित्रों का सांस्कृतिक उन्नयन हुआ है ।नैतिकता ,धैर्यशीलता ,क्षमाशीलता ,संस्कारसंपन्नता, चरित्रसम्पन्नता ,उच्चशिक्षित होना,बड़ों का सम्मान करना जैसे उच्च सांस्कृतिक मूल्य नाटक के नारी चरित्र सहज-स्वाभाविक रूप में संवहित कर रहे हैं ।आलोच्य नाटक में कन्या –भ्रूणहत्या अर्थात नारी के जन्म को पुरुष केंद्रित समाज द्वारा नकारे जाने के कटु सामाजिक यथार्थ के विरुद्ध आवाज उठाई गई है । बेटा घर का चिराग है ,बेटी पराया धन होती है जैसे दकियानूसी विचार आज 21 वीं शताब्दी में भी कुछ घरों में प्रचलित हैं ।इस मान्यता को आलोच्य नाटक के नारी चरित्र स्वीकार नहीं करते ।पुरुष पात्रों द्वारा कन्या जन्म को नकारना सांस्कृतिक मूल्य विघटन है ,जिसका विरोध आलोच्य नाटक करता है ।

बीज शब्दावली (Key Words): नाटक ,चरित्र संयोजन ,संस्कृति, मूल्य ,सांस्कृतिक मूल्य-बोध

प्रस्तावना (Introduction):

नाटक दृश्य-काव्य है ।यह सामाजिक जागरण एवं समाजसुधार का सशक्त माध्यम है ।नाटक में आद्यंत संवादों के तहत सांस्कृतिक चरित्रों का गठन एवं विकास होता है ।नाटक के रंगमंचीय आयाम चरित्र संयोजन को विशिष्ट अर्थवत्ता प्रदान करते हैं ।विशिष्ट जीवनपद्धति का नाम ही संस्कृति है ।सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर हस्तांतरण होता रहता है ।'ऊँची उड़ान' नाटक में नारी के सबल अस्तित्व का सांस्कृतिक मूल्य प्रखरता से मुखर हो उठा है ।विश्व की 'आधी आबादी' कही जाने वाली नारी के जन्म एवं कर्तृत्व का सांस्कृतिक लेखा-जोखा प्रस्तुत नाटक में चित्रित हुआ है ।

साहित्य सर्वेक्षण (Reveiw of Literature):

नाटक के सांस्कृतिक मूल्य-बोध पर निम्नांकित अनुसंधान कार्य अभी तक संपन्न हुआ है :

1. (डॉ.)शर्मा ,रमेशचंद्र .हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक आधारभूमि.,1965
2. (डॉ.) सुर्वे ,गजानन; स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन.कानपुर :साहित्य रत्नालय,1987

उद्देश्य (Objectives):

प्रस्तुत शोध -निबंध के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

- नाटक के विशेष संदर्भ में सांस्कृतिक मूल्यबोध का अध्ययन प्रस्तुत करना ।
- साहित्य के उच्च मूल्य के रूप में मानवता को प्रतिष्ठित करना ।
- 'ऊँची उड़ान'नाटक के चरित्र संयोजन में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक मूल्य-बोध का अनुशीलन करते हुए नाटक के संदेश को रेखांकित करना ।